The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 2 | February 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

'पूस की रात' में जबरा: पशु-चरित्र के माध्यम से मानवीय संवेदना का यथार्थवादी विस्तार

प्रशान्त मिश्रा

शोधार्थी, हिंदी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीसलपुर, पीलीभीत, उत्तर प्रदेश

(महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली)

डॉ० पवन कुमार त्रिवेदी

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीसलपुर, पीलीभीत, उत्तर प्रदेश

(महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली)

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18920307

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 23-02-2026

Published: 10-03-2026

Keywords:

पशु संवेदना, पूस की रात, मानवीय करुणा, यथार्थवाद, पशु-चरित्र।

ABSTRACT

मुंशी प्रेमचंद हिंदी कथासाहित्य में सामाजिक यथार्थ और मानवीय करुणा के अप्रतिम - कथाकार माने जाते हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानी पूस की रात सामान्यतः एक निर्धन किसान हल्कू कीआर्थिक विवशता की कथा के रूप में पढ़ी जाती है; किंतु गहन विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि इस कहानी का वास्तविक संवेदनात्मक केंद्र उसका कुत्ता जबरा है। प्रस्तुत शोधसाहित्य में -आलेख इस प्रतिपाद्य को स्थापित करता है कि कथा-पात्र गौण हो जाता है और-अनेक बार मनुष्य पशुपात्र संवेदना का प्रधान वाहक बनकर-उभरता है। भारतीय सांस्कृतिक परंपरा, सभ्यतागत साक्ष्यों तथा साहित्यिक उदाहरणों की पृष्ठभूमि में का पुनर्पाठ करते हुए यह सिद्ध किया गया है कि जबरा 'पूस की रात' केवल सहायक पात्र नहीं, बल्कि करुणा, सह अस्तित्व और-यथार्थवाद का सशक्त माध्यम है। भारतीय साहित्यिक परंपरा में पशुपात्रों का प्रयोग अत्यंत प्राचीन है- किंतु प्रेमचंद की दृष्टि इन परंपराओं से भिन्न है। उनके यहाँ पशु न तो केवल रूपक हैं और न ही कोमल भावुकता के प्रतीक; वे सामाजिक यथार्थ के सक्रिय सहभागी हैं।

भारतीय सांस्कृतिक चेतना में पशुओं की उपस्थिति अत्यंत प्राचीन और अर्थगर्भित रही है। रामायण में सेतु-निर्माण के प्रसंग में गिलहरी का योगदान लघुता में भी महत्ता का बोध कराता है; जटायु का आत्मोत्सर्ग निष्ठा और धर्म की सर्वोच्च परिणति है। महाभारत में युधिष्ठिर के साथ स्वर्ग-द्वार तक चलने वाला कुत्ता धर्म और सत्य का प्रतीक बन जाता है। सिंधु घाटी सभ्यता की मुहरों पर अंकित पशु-आकृतियाँ मनुष्य और पशु के सह-अस्तित्व का पुरातात्त्विक प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। कृष्ण का गोपाल रूप भारतीय मानस में करुणा और संरक्षण की स्थायी छवि निर्मित करता है। विष्णु शर्मा रचित पंचतंत्र में पशु-चरित्र नीति-शिक्षा और व्यवहारिक बुद्धि के रूपक हैं। वहाँ सिंह, लोमड़ी, कछुआ या बंदर मनुष्य के गुण-दोषों का प्रतीक बनते हैं। इन उदाहरणों में पशु-

चरित्र प्रतीकात्मक और आदर्शात्मक हैं। आधुनिक समय में पशु-अधिकार आंदोलनों और पशु-प्रेम की प्रवृत्तियाँ इस दीर्घ परंपरा की निरंतरता को प्रमाणित करती हैं। इसी व्यापक सांस्कृतिक संदर्भ में प्रेमचंद का पशु-चित्रण एक यथार्थवादी पुनर्स्थापन के रूप में देखा जाना चाहिए, जहाँ पशु न तो केवल पौराणिक प्रतीक हैं और न ही रूपक, बल्कि सामाजिक जीवन के सक्रिय सहचर हैं। वे मनुष्य को नैतिक संदेश देते हैं। किंतु प्रेमचंद का कथा-लोक इससे भिन्न है। उनके यहाँ पशु सामाजिक यथार्थ के अंग हैं—वे भूख, ठंड, श्रम और असुरक्षा का अनुभव करते हैं। वे किसी नीति-कथा के उपदेशक नहीं, बल्कि जीवन-संघर्ष के सहभागी हैं।

विश्व-साहित्य में पशु-चरित्रों का प्रयोग प्रायः रूपकात्मक आलोचना के लिए हुआ है—जैसे Animal Farm में—परंतु प्रेमचंद के यहाँ पशु ग्रामीण जीवन की प्रत्यक्ष वास्तविकता का अंग हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानी दो बैलों की कथा में बैलों का आत्मसम्मान किसान-जीवन की दासता का समानांतर बनता है, कथा में हीरा और मोती का प्रसंग उल्लेखनीय है, जहाँ बैलों का आत्मसम्मान किसान-जीवन की दासता का समानांतर बनता है। विशेषतः वह दृश्य, जब दोनों बैल नए मालिक के यहाँ अपमान सहते हैं और अवसर पाकर अपने पुराने घर की ओर भागते हैं—यह पशु की स्मृति, आत्मीयता और स्वाभिमान का यथार्थवादी चित्रण है। वहाँ पशु मनुष्य के समान भाव-संपन्न हैं, किंतु वे प्रतीक मात्र नहीं, ग्रामीण अर्थव्यवस्था के श्रमशील अंग हैं। 'दो बैलों की कथा' में बैलों का घर लौटना आत्मसम्मान और स्मृति का संकेत है। वहाँ पशु-चरित्र सामूहिक श्रम और अन्याय के विरुद्ध मौन प्रतिरोध का प्रतीक बनते हैं।

यदि लीक से हटकर महादेवी वर्मा के रेखाचित्र गिल्लू को देखें तो हम पाएंगे 'गिल्लू' में महादेवी वर्मा का दृष्टिकोण आत्मीय और करुणामय है। वहाँ पशु-प्रेम व्यक्तिगत संवेदना का विस्तार है। गिल्लू और लेखिका का संबंध भावुकता और ममता पर आधारित है। इसके विपरीत 'पूस की रात' में जबरा और हल्कू का संबंध भावुकता नहीं, साझा संघर्ष का है। यहाँ करुणा सामाजिक यथार्थ से जुड़ी है। 'पूस की रात' में जबरा प्रतिरोध नहीं करता, बल्कि सहभागिता निभाता है। उसकी भूमिका प्रतिरोध से अधिक सह-अस्तित्व की है। इसी प्रकार 'पूस की रात' में जबरा का चरित्र सूक्ष्म होते हुए भी अत्यंत प्रभावी है। वह कथा के केंद्र में इसलिए है कि हल्कू का संघर्ष उसके बिना अधूरा है। इस परंपरा में 'पूस की रात' का जबरा सूक्ष्म किंतु अत्यंत प्रभावी उपस्थिति के साथ सामने आता है

'पूस की रात' का पुनर्पाठ करने पर स्पष्ट होता है कि कहानी का बाह्य कथानक—हल्कू की निर्धनता और खेत की रखवाली—वास्तव में उस आंतरिक करुणा का मंच है, जो हल्कू और जबरा के साझा अनुभव में व्यक्त होती है।

यथार्थवादी तत्व

1. **आर्थिक विवशता** – हल्कू की निर्धनता, कर्ज़ और खेत की रखवाली की बाध्यता पूर्णतः सामाजिक यथार्थ है।
2. **प्राकृतिक क्रूरता** – पूस की रात की ठंड का वर्णन जीवन की भौतिक सीमाओं को रेखांकित करता है।
3. **मानसिक थकान** – हल्कू का अंततः सो जाना उसकी मानवीय दुर्बलता का यथार्थ चित्रण है।
4. **जबरा का व्यवहार** – उसका काँपना, पास आकर सिमटना, भौंकना—ये सब स्वाभाविक और जीवन-सत्य के अनुरूप हैं।

आदर्शवादी तत्व

कहानी में आदर्शवाद प्रत्यक्ष नहीं, किंतु सूक्ष्म रूप में उपस्थित है। जबरा की निष्ठा और समर्पण एक नैतिक आदर्श का संकेत देते हैं। वह स्वामी का साथ नहीं छोड़ता। यहाँ यह विचार उभरता है कि मनुष्य साथ छोड़ सकता है—साहूकार, व्यवस्था, समाज—परंतु मूक प्राणी की निष्ठा अडिग रहती है। हल्कू की पत्नी मुन्नी की चिंता व्यावहारिक है; वह जीवन की गणना करती है। समाज शोषक है; साहूकार निर्दयी है। इन सबके बीच जबरा ही है जो बिना शर्त साथ देता है। यह आदर्शवादी मूल्य कथा के यथार्थ में ही अंतर्निहित है।

कहानी का आरंभ हल्कू की आर्थिक विवशता से होता है। वह साहूकार का कर्ज़ चुकाने के लिए पूस की कड़ाके की ठंड में खेत की रखवाली के लिए निकलता है। यह यथार्थवादी स्थिति है—ग्रामीण जीवन में कर्ज़ और शोषण की स्थायी उपस्थिति। पूस की रात की ठंड केवल प्राकृतिक परिस्थिति नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना की कठोरता का प्रतीक है।

जब हल्कू खेत की रखवाली के लिए जाता है, उसके साथ केवल उसका कुत्ता जबरा है। कथा में आता है—"खाट के नीचे उसका संगी कुत्ता जबरा पेट में मुँह डाले सर्दी से कूँ-कूँ कर रहा था।" दो में से एक को भी नींद न आती थी।" यह दृश्य मनुष्य और पशु की साझा नियति का आरंभिक संकेत —ठंड से काँपता किसान और उसका कुत्ता। ठंड से काँपते हुए हल्कू जबरा से कहता है—"क्यों जबरा, बहुत ठंड लग रही है? घर में होते तो पुआल पर दुबके रहते। यहाँ तो हाड़ गल जाएँगे।" इस संवाद में केवल आत्मीयता नहीं, बल्कि अस्तित्वगत साझेदारी का बोध है। यहाँ मनुष्य-पात्र का संवेदनात्मक केंद्र पशु की ओर स्थानांतरित हो जाता है। जबरा उसके पास सिमट आता है, मानो मौन भाषा में अपने स्वामी के साथ रहने का संकल्प व्यक्त कर रहा हो। आगे चलकर हल्कू कहता है—"कल से मत आना मेरे साथ, नहीं तो ठंडे हो जाओगे।" यह वाक्य उसकी करुणा का द्योतक है; वह स्वयं विपन्न है, किंतु अपने पशु-संगी के कष्ट को भी उतनी ही तीव्रता से अनुभव करता है।

कहानी के मध्य में अलाव जलाने का प्रसंग अत्यंत प्रतीकात्मक है। हल्कू पत्तियाँ बटोरकर आग जलाता है; कुछ क्षणों के लिए उसे राहत मिलती है। इसी बीच नीलगायें खेत में प्रवेश करती हैं। जबरा भौंककर उन्हें भगाने का प्रयास करता है। हल्कू आधी नींद में बड़बड़ाता है—"भगा दे जबरा, नहीं तो सब चर जाएँगी… लेकिन ठहर, तू भी ठिठुर जाएगा।" यहाँ करुणा और विवशता का द्वंद्व चरम पर है। वह जानता है कि खेत की रक्षा उसकी जीविका का प्रश्न है, परंतु प्रकृति की क्रूरता और शरीर की सीमा उसे निष्क्रिय बना देती है। अंततः खेत नष्ट हो जाता है—पर कहानी की करुणा आर्थिक हानि में नहीं, उस साझे अनुभव में निहित है जहाँ मनुष्य और पशु दोनों व्यवस्था और प्रकृति के सम्मिलित अत्याचार के शिकार बनते हैं।

आलोचनात्मक दृष्टि से हल्कू और जबरा दोनों यथार्थवादी पात्र हैं। हल्कू कोई आदर्शवादी नायक नहीं; वह परिस्थितियों से जूझता हुआ साधारण किसान है। उसका क्षणिक उल्लास, उसकी विवश हँसी और अंततः उसकी पराजय—ये सब यथार्थ के ठोस संकेत हैं। उसी प्रकार जबरा भी अतिनाटकीय साहस का प्रदर्शन नहीं करता; उसका काँपना, पास आकर बैठना और अंततः थककर चुप हो जाना जीवन-सत्य की स्वाभाविक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रेमचंद यहाँ किसी आदर्शवाद का आरोपण नहीं करते, बल्कि जीवन के ठंडे यथार्थ में करुणा की ऊष्मा खोजते हैं। स्वामी के प्रति जबरा का समर्पण कहानी का नैतिक केंद्र है। वह ठंड से व्याकुल होने पर भी हल्कू का साथ नहीं छोड़ता। उसकी निष्ठा पाठक को यह सोचने पर विवश करती है कि मनुष्य और पशु

के बीच संबंध केवल उपयोगिता का नहीं, बल्कि संवेदना और सह-अस्तित्व का है। प्रेमचंद का यथार्थवाद यहाँ मनुष्य-केंद्रित सीमाओं का अतिक्रमण करता है और जीव-जगत की साझी पीड़ा को अभिव्यक्ति देता है।

कहानी का सबसे मार्मिक पक्ष यह है कि हल्कू अंततः खेत की रक्षा नहीं कर पाता। उसकी मानवीय सीमा उसे रोक देती है। किंतु जबरा अपनी सामर्थ्य भर प्रयत्न करता है। वह भौंकता है, चेतावनी देता है, ठंड सहता है। प्रेमचंद का यथार्थवाद यहाँ किसी क्रांतिकारी समाधान की ओर नहीं जाता। खेत नष्ट हो जाता है। हल्कू अगले दिन संतोष प्रकट करता है कि अब उसे ठंड में नहीं सोना पड़ेगा। यह विडंबना यथार्थ का कठोर सत्य है। जबरा की मौन उपस्थिति इस विडंबना को और गहरा कर देती है। वह कोई भाषण नहीं देता, कोई नैतिक उपदेश नहीं करता। उसकी निष्ठा ही कथा का सबसे बड़ा कथन है। यहाँ प्रेमचंद एक मौन प्रश्न उठाते हैं—क्या मनुष्य उतना ही विश्वसनीय है जितना यह पशु? मनुष्य समाज-व्यवस्था के दबाव में संबंध तोड़ सकता है, परंतु जबरा का समर्पण अडिग है। यहाँ आदर्शवाद और यथार्थवाद का सुंदर संतुलन है। यथार्थ यह है कि हल्कू हार जाता है; आदर्श यह है कि निष्ठा का मूल्य अभी भी जीवित है—एक मूक प्राणी के माध्यम से।

समकालीन परिप्रेक्ष्य में भी यह प्रवृत्ति प्रासंगिक है। डिजिटल युग में जापान का चर्चित "पंच" नामक वायरल बंदर वैश्विक दर्शकों के लिए आत्मीयता का केंद्र बना—यह तथ्य दर्शाता है कि तकनीकी आधुनिकता के बावजूद मनुष्य का भावनात्मक तंत्र पशु-जगत से जुड़ा हुआ है। इस प्रकार 'पूस की रात' का जबरा केवल साहित्यिक पात्र नहीं, बल्कि सार्वकालिक मानवीय संवेदना का प्रतीक है।

निष्कर्ष

अतः स्पष्ट है कि 'पूस की रात' में जबरा कथा का न तो केवल सहायक पात्र है, न ही प्रतीकात्मक रूपक; वह जीवित यथार्थ का अंग है। पूस की रात' में जबरा कथा का संवेदनात्मक केंद्र और नैतिक केंद्र के रूप में स्थापित होता है। हल्कू की आर्थिक त्रासदी के समानांतर जबरा की निष्ठा और सहभागिता कहानी को गहरी नैतिक ऊँचाई प्रदान करती है। प्रेमचंद का यथार्थवाद यहाँ मनुष्य-केंद्रित दृष्टि से आगे बढ़कर समस्त जीव-जगत की साझी करुणा को अभिव्यक्त करता है। जबरा केवल एक पशु-चरित्र नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना के विस्तार का जीवंत और प्रमाणिक रूप है—एक ऐसा मौन पात्र, जिसकी उपस्थिति कहानी को किसान-जीवन की सीमाओं से उठाकर सार्वभौमिक मानवीय अनुभव का दस्तावेज़ बना देती है। प्रेमचंद की विशेषता यही है कि वे पशु-चरित्र को नीतिकथा के रूपक से निकालकर सामाजिक यथार्थ के मध्य स्थापित करते हैं। 'पूस की रात' इस दृष्टि से केवल किसान-जीवन का दस्तावेज़ नहीं, बल्कि मनुष्य और पशु की साझा नियति का मार्मिक आख्यान है।

इस प्रकार सिद्ध होता है कि जबरा मानवीय संवेदना के विस्तार का जीवंत और प्रमाणिक रूप है—एक ऐसा मूक पात्र, जो अपने मौन में मनुष्य से अधिक बोलता है।

सन्दर्भ -

- कमल किशोर गोयनका, प्रेमचंद रचनावली, भाग -3

- कमल किशोर गोयनका, प्रेमचंद रचनावली, भाग -6
- डॉ० श्रीकृष्ण लाल, हिंदी कहानियां, साहित्य भवन प्रा०लि०
- इग्नू, प्रेमचंद की कहानियाँ MHD-10(H), BL,4
- https://www.hindwi.org/story/poos-ki-raat-premchand-story
- https://www.jansatta.com/videos/news-video/viral-japanese-monkey-punch-with-plush-ikea-toy-ora-mama-sad-story/4419231/